षष्ठ खण्ड

दक्षिणेश्वर-मन्दिर में रतन प्रभृति भक्तों के संग में

प्रथम परिच्छेद

(श्रीरामकृष्ण की एक चिन्ता और एक वाणी— ईश्वर-सा चातुरी चातुरी)

श्रीरामकृष्ण श्री कालीबाड़ी के उसी पूर्वपरिचित कक्ष में छोटी खाट पर बैठे हैं। सहास्यवदन! भक्तों के साथ बातें कर रहे हैं। उनका आहार हो गया है। समय एक-दो का होगा।

आज रविवार, 9 सितम्बर, 1883 ईसवी। भाद्र शुक्ला सप्तमी। कमरे की फर्श पर राखाल, मास्टर, रतन बैठे हुए हैं। श्रीयुक्त रामलाल, श्रीयुक्त राम चैटर्जी, श्रीयुक्त हाजरा बीच-बीच में आते हैं और बैठते हैं। रतन श्रीयुक्त यदुमल्लिक के बाग का प्रबन्ध करते हैं। ठाकुर की भक्ति करते हैं और कभी-कभी आकर दर्शन करते हैं। रतन कहते हैं, यदुमल्लिक के कलकत्ता के घर में नीलकण्ठ की गीतिनाटिका (जात्रा*) होगी।

रतन— आपको चलना होगा। उन्होंने कहलवाया है कि अमुक दिन 'यात्रा' (नाटक)[1] होगी।

श्रीरामकृष्ण— बहुत सुन्दर! मेरी भी जाने की इच्छा है। आहा! कैसा

---

* जात्रा— स्टेज के बीच में और स्टेज के चारों ओर दर्शक। साँग (स्वाँग) भी शायद इसी तरह होता है।

भक्तिपूर्ण गान नीलकण्ठ का!

एकजन भक्त— जी हाँ!

श्रीरामकृष्ण— गाना गाते-गाते वह चक्षुओं के जल में डूब जाता है। *(रतन के प्रति)* मन में हो रहा है रात में रह जाऊँ!

रतन— वह तो बड़ा अच्छा है।

राम चटर्जी आदि कइयों ने खड़ाऊँ-चोरी की बात पूछी।

रतन— यदु बाबू के घर से देवता की सोने की खड़ाऊँ चोरी हो गई हैं। उसके लिए घर में कोलाहल हो रहा है। थाली चलाई जाएगी। सब बैठे रहेंगे, जिसने ली है उसकी ओर थाली चल जाएगी।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— थाली कैसे चलती है? अपने-आप चलती है?

रतन— ना, हाथ से दबाई हुई होती है।

भक्त— हाथ का कोई एक ऐसा कौशल है— हाथ की चतुराई है।

श्रीरामकृष्ण— जिस चातुरी से भगवान को प्राप्त किया जाता है, वह चातुरी ही चातुरी है— सा चातुरी चातुरी।

द्वितीय परिच्छेद

तान्त्रिक साधन और ठाकुर श्रीरामकृष्ण का सन्तान-भाव

कथावार्त्ता चल रही है। इस समय कुछ बंगाली सज्जनों ने कमरे में आकर ठाकुर को प्रणाम किया और आसन ग्रहण किया। उनमें से एक जन ठाकुर के पूर्वपरिचित हैं। ये तन्त्र-मत से साधन करते हैं— पञ्चमकार-साधन*। ठाकुर हैं अन्तर्यामी, उनका समस्त भाव जान लिया है। उनमें से एक धर्म का नाम करके पापाचरण करते हैं— यह भी सुना हुआ है। उस व्यक्ति ने किसी बड़े मनुष्य के भाई की विधवा के साथ अवैध प्रणय किया है और धर्म का नाम करके उसके साथ पञ्चमकार-साधना करते

---

* पञ्चमकार-साधन=मद्य, माँस, मछली, मुद्रा, मैथुन।

हैं— यह भी सुना हुआ है।

श्रीरामकृष्ण का सन्तान-भाव है। प्रत्येक स्त्री को माँ मानते हैं— वेश्या तक को! और भगवती का एक-एक रूप देखते हैं।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— अचलानन्द कहाँ पर हैं? कालीकिंकर उस दिन आया था। और एक जन था— क्या सिंगी?

(मास्टर आदि के प्रति) अचलानन्द और उसके शिष्यों का भाव अलग है। मेरा सन्तान-भाव है।

आगन्तुक बाबू लोग चुप हैं, मुख से कोई बात नहीं।

(पूर्वकथा— अचलानन्द की तान्त्रिक साधना)

श्रीरामकृष्ण— मेरा सन्तान-भाव है। अचलानन्द यहाँ पर आकर बीच-बीच में रहा करता था। खूब कारण (मदिरा) पिया करता था। मेरा सन्तान-भाव सुनकर बाद में हठ करके कहने लगा— "स्त्री को लेकर तुम वीर-भाव में साधन क्यों नहीं मानते? शिव की कलम को नहीं मानते? शिव तन्त्र लिख गए हैं। उसमें सब भावों का साधन है— वीर-भाव का भी साधन है।

"मैंने कहा, कौन जाने भाई! वैसा मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। मेरा सन्तान-भाव है।"

(पिता का कर्त्तव्य— सिद्धाई और पञ्चमकार की निन्दा)

"अचलानन्द लड़कों-बच्चों की खबर नहीं लेता। मुझ से कहा करता, 'बच्चों को ईश्वर देखेंगे— यह ईश्वर की इच्छा है!' मैं सुनकर चुप रहता। कहता हूँ, बच्चे कौन पालन करेगा? बच्चे-स्त्री त्याग करके शायद रुपया कमाने का एक ढंग कर लिया है। लोग सोचेंगे, इन्होंने सर्वत्याग किया है, फिर बहुत रुपया आ पड़ेगा।

" 'मुकदमा जीतूँगा, खूब रुपया होगा। मुकदमा जितवा दूँगा, विषय दिलवा दूँगा'— इसके लिए साधन करना? यह बड़ी हीनबुद्धि की बात है।

"पैसे से खाना-पीना होता है, रहने को एक स्थान हो जाता है, देव-सेवा होती है, साधु-भक्तों की सेवा होती है, सामने कोई गरीब आ पड़े तो उसका उपकार होता है। रुपये का यह सद्व्यवहार है। ऐश्वर्य-भोग के लिए पैसा नहीं, देह के सुख के लिए पैसा नहीं, लोकमान्य (नाम-यश) के लिए पैसा नहीं।

"सिद्धाई के लिए लोग तन्त्रमत में पंचमकार की साधना करते हैं। किन्तु कैसी हीनबुद्धि! कृष्ण ने अर्जुन से कहा था, 'भाई! अष्टसिद्धियों में से एक भी सिद्धि होने पर तुम्हारी थोड़ी-सी शक्ति बढ़ सकती है, किन्तु मुझे नहीं पाओगे।' सिद्धाई के रहने पर माया नहीं जाती। माया के रहने पर फिर और अहंकार होता है। कैसी हीनबुद्धि! घृणा के स्थान से तीन टोसा (घूँट) मदिरा पीने से लाभ क्या? या मुकदमा जीतना!"

(दीर्घायु होने के लिए हठयोग का क्या प्रयोजन?)

"शरीर, रुपया इत्यादि सब अनित्य हैं। इसके लिए, इतना क्यों? हठयोगियों की दशा देखो ना! 'शरीर कैसे दीर्घायु होगा'— इस ओर ही नजर है। ईश्वर की ओर लक्ष्य नहीं। नेति, धौति— केवल पेट साफ करते हैं। नल द्वारा दूध ग्रहण करते हैं!

"एक सुनार था। उसकी जीभ उलट कर तालु पर चिपक गई, तब वह जड़समाधि जैसा हो गया। अब हिलता-जुलता नहीं। बहुत दिन उसी भाव में रहा। सब आकर पूजा करने लगे। कई वर्ष पश्चात् उसकी जीभ हठात् सीधी हो गई। तब पहले की भाँति उसे होश आ गई, और फिर सुनार का काम करने लगा। *(सबका हास्य)*।

"ये सब शरीर के कार्य हैं। उससे प्राय: ईश्वर के संग सम्बन्ध नहीं रहता। शालग्राम के भाई का बंशलोचन का कारोबार था। बयासी प्रकार के आसन जानता था और अपनी योगसमाधि की बातें बताता था! किन्तु भीतर ही भीतर कामिनी-काञ्चन पर मन है। दीवान मदन भट्ट का कितने हजार रुपये का एक नोट पड़ा हुआ था! पैसे के लोभ में वह गप से खा गया, निगल

गया— पीछे किसी प्रकार निकाल लेगा! किन्तु उससे नोट वसूल हो गया। अन्त में तीन वर्ष की जेल हुई। मैं सरल बुद्धि से सोचता था, 'शायद वह आगे बढ़ गया है,— सौगन्ध खाकर कहता हूँ'!''

(पूर्वकथा— महेन्द्रपाल का रुपया लौटाना, भगवती तेलिन, कर्ताभजा मत में औरतों को लेकर साधना की निन्दा)

''यहाँ सींथि का महेन्द्रपाल पाँच रुपये दे गया था— रामलाल के पास। उसके चले जाने पर रामलाल ने मुझसे कहा। मैंने पूछा, 'क्यों दे गया है?' रामलाल बोला, 'यहाँ के लिए दे गया है।' तब मन में अया कि दूध का देना रह गया है। चलो, कुछ उधार उतर जाएगा। ओ माँ, रात को लेटा हुआ था, हठात् उठ बैठा! एकदम छाती के भीतर बिल्ली पंजे मारने लगी! तब जाकर रामलाल से कहा, 'किसको दिए हैं? तेरी चाची को दिए हैं क्या?' रामलाल ने कहा, 'नहीं, आपके लिए दिए हैं।' तब मैं बोला— 'नहीं, अभी ये रुपये लौटा आ, नहीं तो मुझे शान्ति नहीं होगी।' रामलाल भोर में उठकर रुपये वापस दे आया। तो हुआ।

''उस गाँव में कर्ताभजाओं के दल की भगि (भगवती) तेलिन थी। उनकी वहीं औरतों के साथ साधना होती है। एक पुरुष के बिना औरत का साधन-भजन नहीं होता। उस पुरुष को कहते हैं 'रागकृष्ण'। तीन बार पूछता है, 'कृष्ण पा लिया है?' वह स्त्री तीन बार कहती है, 'पा लिया है'!

''भगि शूद्र तेलिन थी। सब जाकर उसके पाँव की धूल लेकर नमस्कार किया करते। तब जमींदार को बड़ा क्रोध आया। मैंने उसे देखा हुआ है। जमींदार ने एक दुष्ट व्यक्ति भेज दिया। उसके पल्ले पड़कर उसके पेट से फिर लड़का हुआ।

''एक दिन एक बड़ा मनुष्य आया था। मुझ से कहा, 'महाशय यह मुकदमा मैं किसी तरह जीत जाऊँ— आप ऐसा कर दें। आपका नाम सुनकर आया हूँ।' मैं बोला, 'भाई, वह मैं नहीं हूँ— तुम्हारी भूल हुई है। वह अचलानन्द है।'

''जिसकी ठीक-ठीक ईश्वर पर भक्ति है, वह शरीर, रुपया इत्यादि ग्रहण नहीं करता। वह विचार करता है कि वह देह-सुख के लिए है या लोकमान्य के लिए है या रुपये के लिए है। और फिर जप-तप क्या है? यह सब अनित्य है, केवल दो-तीन दिन के लिए है।''

आगन्तुक बाबू अब उठे और नमस्कार करके बोले, तो हम चलें। वे चले गए। ठाकुर श्रीरामकृष्ण ईषत् हास्य कर रहे हैं और मास्टर से कह रहे हैं, 'चौरा ना शुने धर्मेर काहिनी।' (चोर धर्म की कहानी नहीं सुनता) *(सबका हास्य)*।

तृतीय परिच्छेद

(अपने ऊपर श्रद्धा का मूल है ईश्वर पर विश्वास)

श्रीरामकृष्ण *(मणि के प्रति, सहास्य)*— अच्छा, नरेन्द्र कैसा है!

मणि— जी, खूब भला।

श्रीरामकृष्ण— देख, उसकी जैसी विद्या तैसी बुद्धि! और फिर गाने-बजाने में भी। इधर जितेन्द्रिय है, कहता है, विवाह नहीं करेगा।

मणि— आपने कहा है, जो पाप-पाप सोचता रहता है, वही पापी हो जाता है। फिर उठ नहीं सकता। 'मैं ईश्वर का बेटा'— ऐसा विश्वास रहने से शीघ्र-शीघ्र उन्नति होती है।

(पूर्वकथा— कृष्णकिशोर का विश्वास— हलधारी के पिता का विश्वास)

श्रीरामकृष्ण— हाँ, विश्वास!

''कृष्णकिशोर का कैसा विश्वास! कहता था, 'एक बार उनका नाम किया है, मेरा फिर और पाप क्या? मैं शुद्ध निर्मल हो गया हूँ।' हलधारी ने कहा था, 'अजामिल फिर नारायण की तपस्या के लिए गए थे, तपस्या बिना किए क्या उनकी कृपा मिलती है? केवल एक बार नारायण कहने से क्या

होगा?' वह बात सुनकर कृष्णकिशोर को कैसा जो क्रोध! इस बाग में फूल तोड़ने आया था, हलधारी के मुख की ओर आँख से देखा भी नहीं।

''हलधारी का पिता बड़ा भारी भक्त था। स्नान के समय कमर भर जल में जाकर मन्त्र उच्चारण करता— 'रक्तवर्णम् चतुर्मुखम्' का ध्यान करता तो चक्षुओं से प्रेमाश्रु गिरते।

''एक दिन एँड़ेदा के घाट पर एक साधु आया था। हम देखने जाएँगे— यह बात हुई। हलधारी ने कहा, 'उस पंचभूत के खोल को देखने से क्या होगा?' उसके पश्चात् यह बात कृष्णकिशोर ने सुनकर कहा था, 'क्या! साधु के दर्शन करने से क्या होगा' ऐसी बात कही! जो कृष्ण-नाम लेता है, अथवा राम-नाम लेता है, उसकी चिन्मय देह होती है। और वह सब चिन्मय देखता है— 'चिन्मय श्याम चिन्मय धाम'। कहा था, 'एक बार कृष्ण-नाम या एक बार राम-नाम कर लेने पर सौ बार सन्ध्या करने का फल मिलता है।' उसका एक लड़का जब मरा था, प्राण जाते समय राम-नाम बोला था। कृष्णकिशोर ने कहा था, 'वह 'राम' बोला था, उसकी फिर चिन्ता क्या! किन्तु बीच-बीच में एक-एक बार रोता था। पुत्रशोक!'

''वृन्दावन में प्यास लगी, मोची से कहा, तू बोल 'शिव'! उसने 'शिव' नाम करके जल निकाल दिया। ऐसा आचारी ब्राह्मण! वही जल पी गया। कैसा विश्वास!

''विश्वास तो नहीं है, किन्तु पूजा, जप, सन्ध्यादि कर्म करता है— उससे कुछ भी नहीं होता! क्या कहते हो?''

मणि— जी हाँ।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— देखा है, गंगा के घाट पर नहाने आए हैं। सब दुनिया भर की बातें होती हैं! विधवा बुआ कहती है— 'माँ, दुर्गा-पूजा मेरे बिना नहीं होती— देवी-मूर्ति गढ़ने तक! घर में विवाह का काज होने पर सब मुझे करना पड़ता है माँ, तभी होता है— फूल-शय्या*, कत्थे के बाग तक!'

---

* फूल-शय्या= फूलों का बिछौना, विवाह की तीसरी रात को दम्पति के प्रथम शयन के लिए। बंगाल की रीति।

मणि— जी, इन लोगों का फिर दोष भी क्या ? क्या लेकर रहें !

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— छत के ऊपर पूजा-घर है, नारायण-पूजा हो रही है। पूजा का नैवेद्य, चन्दन घिसना इत्यादि हो रहा है। किन्तु ईश्वर की बात एक भी नहीं। 'क्या राँधना होगा, आज बाजार में कुछ अच्छा नहीं मिला। कल अमुक व्यंजन बढ़िया बना था ! वह लड़का मेरा चचेरा भाई लगता है। हाँ रे, तेरा वही काम है ना ?— फिर मैं कैसी हूँ ! मेरा हरि नहीं है' इत्यादि— ऐसी ही बातें होती हैं।

"देखो तो ज़रा, पूजा-घर में पूजा के समय भी ऐसी ही दुनिया भर की बात-चीत !"

मणि— जी, अधिकांश ऐसा ही है। आप जैसे कहते हैं, ईश्वर पर जिसका अनुराग है, उसे क्या अधिक दिन पूजा-सन्ध्या करनी पड़ती है !

चतुर्थ परिच्छेद

(चिन्मय रूप क्या— ब्रह्म-ज्ञान के बाद विज्ञान— ईश्वर ही वस्तु)

ठाकुर मणि के साथ अकेले बातें कर रहे हैं।

मणि— जी, वे ही यदि सब कुछ बने हुए हैं, तो फिर ऐसे नाना भाव क्यों हैं ?

श्रीरामकृष्ण— विष्णुरूप में वे सर्वभूतों में हैं, किन्तु शक्ति विशेष होती है। कहीं विद्याशक्ति, कहीं अविद्याशक्ति; कहीं पर अधिक शक्ति, कहीं पर फिर कम शक्ति। देखते नहीं, मनुष्य के भीतर ठग-जुआरी हैं, और फिर बाघ जैसा भयानक व्यक्ति भी है। मैं कहता हूँ, 'ठग नारायण', 'बाघ नारायण'।

मणि *(सहास्य)*— जी, उन्हें दूर से नमस्कार करना चाहिए। 'बाघ नारायण' को निकट लाकर आलिंगन करने से खा लेगा।

श्रीरामकृष्ण— वे और उनकी शक्ति। ब्रह्म और शक्ति के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। नारद रामचन्द्र का स्तव करते-करते बोले, 'हे राम ! तुम्हीं शिव, सीता भगवती; तुम्हीं ब्रह्मा, सीता ब्रह्माणी; तुम इन्द्र, सीता इन्द्राणी; तुम्हीं

नारायण, सीता लक्ष्मी। पुरुषवाचक जो कुछ है सब तुम हो, स्त्रीवाचक सब सीता।'

मणि— और चिन्मय रूप?

श्रीरामकृष्ण थोड़ा सोच रहे हैं। धीरे-धीरे कहते हैं,

''किस प्रकार है, जानते हो— जैसे जल का— यह सब साधना करने से जाना जाता है।

''तुम 'रूप' में विश्वास करते हो? ब्रह्मज्ञान हो जाने पर तब अभेद— ब्रह्म और शक्ति अभेद। जैसे अग्नि और उसकी दाहिका शक्ति। अग्नि का सोचते ही दाहिका शक्ति सोचनी पड़ती है, और दाहिका शक्ति का सोचते ही अग्नि सोचनी पड़ती है। दूध और दूध का धवलत्व, जल और उसकी हिम शक्ति।

''किन्तु ब्रह्म-ज्ञान के पश्चात् भी है। ज्ञान के बाद विज्ञान। जिसको ज्ञान है, बोध हो गया है, उसको अज्ञान भी है। वसिष्ठ सौ पुत्रों के शोक में कातर हो गए। लक्ष्मण के पूछने पर राम बोले, 'भाई! ज्ञान-अज्ञान के पार हो जाओ। जिसका ज्ञान है, उसका अज्ञान भी है। पैर में यदि काँटा चुभ जाए, तो और एक काँटा संग्रह करके उस काँटे को निकाल देना चाहिए। तत्पश्चात् दूसरा काँटा भी फेंक दिया जाता है।

मणि— अज्ञान-ज्ञान, दोनों को फेंक देना चाहिए?

श्रीरामकृष्ण— हाँ, इसलिए विज्ञान का प्रयोजन है!

''देखो ना, जिसे प्रकाश-ज्ञान है, उसे अन्धकार-ज्ञान है। जिसे सुख-बोध है, उसे दुख-बोध है; जिसे पुण्य-बोध है, उसे पाप-बोध है; जिसे भला-बोध है, उसे मन्दा-बोध है; जिसे शुचि-बोध है, उसे अशुचि-बोध है; जिसे 'मैं'-बोध है, उसे 'तुम'-बोध भी है।

''विज्ञान— अर्थात् उनको विशेष रूप में जानना। 'काठ में अग्नि है'— इस बोध, इस विश्वास का नाम है ज्ञान। इस आग से भात पकाना, खाना, खाकर हृष्ट-पुष्ट होने का नाम है विज्ञान। 'ईश्वर हैं'— यही है बोधे

बोध। इसका नाम है ज्ञान। उनके साथ आलाप, उनको लेकर आनन्द करना— वात्सल्य-भाव में, सख्य-भाव में, दास-भाव में, मधुर-भाव में— इसी का नाम है विज्ञान। जीव-जगत वे ही बने हैं— यही दर्शन करने का नाम है विज्ञान।

''एक मत में दर्शन नहीं होता— कौन किस का दर्शन करे? आप ही अपने को देखता है। काले पानी में जहाज जाने पर लौटता नहीं— फिर लौट कर खबर देता नहीं।''

मणि— जैसे आप कहते हैं मौन्युमैण्ट के ऊपर चढ़ने पर फिर नीचे की खबर नहीं रहती,— गाड़ी-घोड़ा, मेम-साहेब, बाड़ी, घर, द्वार, दुकान, ऑफिस इत्यादि।

श्रीरामकृष्ण— अच्छा, आजकल काली-मन्दिर में नहीं जाता, कुछ अपराध होगा क्या? नरेन्द्र कहता था, ये अब भी काली-मन्दिर जाते हैं।

मणि— जी, आपकी नूतन-नूतन अवस्था है— आप का फिर अपराध क्या?

श्रीरामकृष्ण— अच्छा, हृदय के लिए सेन को उन लोगों ने कहा था, 'हृदय को बड़ा असुख है, आप उसके लिए दो धोती, दो कुरते लाना, हम उसके लिए गाँव (शिओड़) भेज देंगे।' सेन लाया था दो रुपये! अच्छा, बताओ न, यह क्या है ज़रा? इतना रुपया है! किन्तु यही देना! बोलो ना!

मणि— जी, जो ईश्वर को जानने के लिए घूमते हैं, वे इस प्रकार नहीं कर सकते;— जिनका ज्ञान-लाभ उद्देश्य है।

श्रीरामकृष्ण— ईश्वर ही वस्तु है और सब अवस्तु।